From the desk of

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की उभरती प्रवृत्तियां एवं चुनौतियाँ

Emerging Trends and challenges before Indian Political System.

समकालीन परिस्थितियाँ किसी भी देश की राज व्यवस्था को प्रभावित करती हैं। जैसे-2 परिस्थितियों में परिवर्तन आता है वैसे-वैसे देश की राजनीति तथा राज्य व्यवस्था में भी परिवर्तन आता है। भारत भी इस प्राकृतिक सिद्धान्त से अलग नहीं है और भारत की परिस्थितियों ने भी राजनीति को बहुत प्रभावित किया है। संविधान द्वारा भारत में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था को अपनाया है। सन् 1952 से लेकर अब तक देश में 16 लोकसभा चुनाव हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त अब तक विभिन्न राज्यों में विधानसभाओं के भी चुनाव हो चुके हैं। संविधान की प्रस्तावना के अनुसार भारत एक प्रभुसत्ता-सम्पन्न समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्रीय गणराज्य घोषित किया गया है। प्रस्तावना में ही नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय की ~~घोषणा~~ स्थापना का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है। संविधान के लागू होने से लेकर 1967 तक कांग्रेस देश की राजनीति पर छाई रही, लेकिन उसके पश्चात् देश की राज व्यवस्था में कई प्रकार के परिवर्तन आए। 1967 में पहली बार केरल में गैर-कांग्रेसी सरकार का गठन किया गया। इस गठन के पश्चात् लगातार भारतीय राजनीति तथा राज्य-व्यवस्था में नवीन प्रवृत्तियां उभर रही हैं जिनका अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

1) एक दल की प्रधानता की पुर्नस्थापना :-

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिसके कारण संविधान के लागू होने के शुरू के कई वर्षों तक देश की राजनीति में इस दल का प्रभुत्व

Scanned by TapScanner

From the desk of

Date

रहा। सन् 1952 से 1967 तक केन्द्र तथा सभी राज्यों (केवल केरल को छोड़ कर इसी दल की सरकारें रहीं। सन् 1977 में हुए लोकसभा चुनावों के पश्चात् पहली बार केन्द्र में गैर-कॉंग्रेसी (जनता पार्टी की सरकार बनी, परन्तु आपसी फूट के कारण यह पार्टी अधिक समय तक सत्ता में नहीं रह सकी और 1980 में पुनः कॉंग्रेस सत्ता में आ गई। 1984 में किसी भी दल को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। राष्ट्रीय मोर्चा ने भारतीय जनता पार्टी तथा कई अन्य रा० दलों के समर्थन से गठबन्धन सरकार बनाई थी जो अधिक समय तक नहीं टिक पाई। यह सिलसिला कई वर्षों तक चला श्री चन्द्रशेखर की सरकार, H.D देवगोड़ा की सरकार इन्द्रकुमार गुजराल की सरकार, अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार केवल थोड़े-2 ही समय के लिए बनी लेकिन 2004 के पश्चात् इस स्थिति में परिवर्तन हुआ। BJP ने लोकसभा में अकेले अपने दम पर पूर्ण बहुमत से अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया हालांकि सरकार का गठन अन्य सहयोगी दलों के साथ मिलकर किया परन्तु एक बार पुनः 1967 से पूर्व तक कांग्रेस के प्रभुत्व वाली स्थिति को भारतीय जनता पार्टी ने 16 वीं लोकसभा चुनाव के बाद फिर स्थापित कर दिया है।

(2) मजबूत क्षेत्रीय दलों का उभरना :→ Congress पार्टी के कमजोर होने के परिणाम स्वरूप भारतीय राजनीति में एक अन्य प्रवृत्ति उभरकर सामने आई है वह है शक्तिशाली क्षेत्रीय दल। 1967 के चौथे आम चुनावों के पश्चात् कई राज्यों में क्षेत्रीय दलों की सरकार बनने के कारण क्षेत्रीय दलों का महत्व बढ़ने लगा 1984 में तो मुख्य विपक्षी पार्टी एक क्षेत्रीय पार्टी तेलुगू-देशम ही थी V.P. Singh की सरकार क्षेत्रीय दलों के सहयोग से बनी थी 1991 में कांग्रेस पार्टी ने प्रमुख क्षेत्रीय दलों अन्ना द्रमुक के बाहरी समर्थन से सरकार बनाई थी। 16 वीं L.S चुनावों के पश्चात् भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन सरकार के भी 12 क्षेत्रीय दलों के प्रतिनिधि शामिल थे। 17. L.S चुनावों की B.J.P में भी सहयोगी दल शामिल थे।

Oddy

Scanned by TapScanner

From the desk of

Date

अब कोई भी राष्ट्रीय दल अकेले स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने का दावा नहीं कर सकता। इस प्रकार क्षेत्रीय दलों की बढ़ती हुई भूमिका ने राजनीतिक एकाधिकार एकाधिकारवाद की प्रवृत्ति को तोड़ दिया है।

(3) मिली-जुली सरकार के युग का आरम्भ :- 1977 के बाद से केन्द्र में मिली जुली सरकारों का युग आरम्भ हुआ। 1977 में चार राजनैतिक दलों ने मिलकर जनता पार्टी का गठन किया। इसके पश्चात् V.P. Singh, अटल बिहारी वाजपेयी। 12वीं L.S, 13वीं L.S, 14वीं L.S, 15-वीं L.S सभी गठबन्धन वाली सरकारें थीं। 16वीं L.S और 17वीं L.S में पहली BJP को पूर्ण बहुमत अपने दम पर प्राप्त हुआ परन्तु मिश्रित सरकार का गठन किया गया है। इसी तरह गठबन्धन की प्रवृत्ति से राज्य सरकारें भी अलग नहीं हैं।

(4) केन्द्र राज्य सम्बन्धों में परिवर्तन की माँग :

अनेक क्षेत्रीय दलों के अपने राज्यों में सत्ता आ जाने के कारण क्षेत्रीय भावनाओं और आकांक्षाओं को बहुत बढ़ावा मिला है। जनता राष्ट्रीय दलों के मुकाबले में क्षेत्रीय दलों को अपने नजदीक मानने लगी है। इस कारण से केन्द्र तथा राज्यों के आपसी सम्बन्धों में परिवर्तन करके राज्यों को अधिक स्वायत्तता देने की माँग जोर पकड़ने लगी। स्पष्ट है वर्तमान में राज्यों की निरन्तर बढ़ती स्वायत्तता की माँग केन्द्र सरकार के लिए एक चुनौती बन गई है।

(5) भारतीय संघ में नए राज्यों की माँग :

भारत में प्रारम्भ से ही जाति, भाषा, धर्म तथा आर्थिक पिछड़ेपन के कारण विभिन्न क्षेत्रों द्वारा पृथक राज्य की माँगे समय-समय पर उठाई गई तथा आन्दोलन किए गए। भाषा के आधार पर कई राज्यों का पुनर्गठन किया गया परन्तु अभी भी समस्या हल नहीं हुई और अन्य माँगे सामने आई अभी भी देश के विभिन्न भागों जैसे महाराष्ट्र में विदर्भ, कर्नाटक में कोडवा, असम में बोडोलैण्ड, UP में हरितप्रदेश आदि राज्य बनाने की माँग में काफी तेजी आई है। इस तरह भारतीय संघ में नए राज्यों की तीव्र बढ़ती माँग एवं आन्दोलनों ने एक नई समस्या उत्पन्न की है।

Oddy

Scanned by TapScanner

From the desk of

(6) सरकार के गठन के लिए रा० दलों के द्वारा असैद्धान्तिक समझौते एक सामान्य बात हो गई है। प्रायः सभी रा० दल सत्ता में भागीदारी के लिए ऐसे समझौते करने के लिए तत्पर रहते हैं। 1980 में सभी दलों ने सिद्धान्तहीन समझौते किए। 1989 में L.S चुनावों में जनता दल ने साम्यवादी दल तथा BJP के साथ समझौता किया। Congress ने केरल में मुस्लिम लीग or तमिलनाडु में AIDMK के साथ, BJP ने हरियाणा में हरियाणा विकास पार्टी के साथ महाराष्ट्र में शिवसेना के साथ, पंजाब में अकाली दल के साथ असैद्धान्तिक समझौते किए।

(7) शक्तिशाली विरोधी दल का अन्त :- सन 1967 तक केन्द्र तथा अधिकतर राज्यों में कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व रहा और संगठित विरोधी दल का पूर्ण अभाव था। 1984 में हुए L.S चुनावों में BJP जो Congress (आई) का विकल्प होने का दावा करती थी केवल दो स्थान प्राप्त कर सकी। 16वीं 17वें L.S चुनावों में कोई भी अन्य रा० दल सदन की कुल सदस्या का 10% स्थान भी प्राप्त नहीं कर सका है। इसप्रकार भा० राजनीति में शक्तिशाली विरोधी दल का अन्त हो चुका है।

(8) भारतीय रा० का अपराधीकरण :- भारत में बहुदलीय प्रणाली होने के कारण पिछले लगभग 25 वर्षों से गठबन्धन सरकारें बनने लगी हैं इन गठबन्धन सरकारों के निर्माण में कुछ रा० दल साम, दाम, दण्ड, भेद रूपी चाणक्य नीति के दुर्गुणों का बहुत अधिक प्रयोग करते हैं। इसके परिणाम स्वरूप अपराधिक प्रवृति के लोग भी चुनाव जीतने लगे हैं वे न केवल जनप्रतिनिधि अपितु मन्त्री भी बन जाते हैं। समाज में अनेकों ही अपराधों के दोषी प्रत्येक रा० दल में मौजूद हैं और देश की रा० में सक्रिय हैं।

(9) भारतीय रा० में जातिवाद की भूमिका :- वैसे तो भारत की रा० में जातिवाद की भूमिका का आरम्भ 1909 में अंग्रेजी शासन द्वारा किया गया था परन्तु संविधान के द्वारा जातिवाद के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था ने इसे और अधिक मजबूत बना दि[या] चुनावों में, उम्मीदवारों का चयन करते, वोट मांगने में जातिवाद का खुल[कर] प्रयोग किया जाता है। एक बार जयप्रकाश नारायण ने कहा था। "भारत में जाति एक महत्वपूर्ण रा० दल है।"

(10) भारतीय रा० में सम्प्रदायवाद की भूमिका :- यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि आज भी रा० उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लोगों की धार्मिक भावनाओं का प्रयोग किया जाता है। भारत में DMK, मुस्लिम लीग, अकाली दल, हिन्दू महासभा, शिवसेना विशेष रूप से इनका गठन धर्म के आधार पर किया गया है। इस प्रकार साम्प्रदायिकता भारतीय रा० के समक्ष एक चुनौती है।

(11) रा० दलों में अनुशासन का अभाव :- रा० दलों के सदस्य अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए दल में अनुशासन की परवाह नहीं करते ऐसे अनेक उदाहरण है जब दल के एक सदस्य को चुनाव के लिए टिकट नहीं मिलता, तो वह दल से त्याग-पत्र देकर अपने ही दल के प्रत्याशी के विरुद्ध चुनाव में खड़ा हो जाता है।

(12) राजनीतिक भ्रष्टाचार :→ भारतीय रा० व्यवस्था में एक अन्य प्रवृति देश में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार है। चुनावों के समय प्रत्येक रा० दल तथा उम्मीदवार करोड़ो रुपया खर्च करता है फिर स्वार्थों की पूर्ति के लिए अपनी कुर्सी तथा स्थिति का प्रयोग धन को इकट्ठा करने के लिए करते हैं। बोफोर्स का मामला, हर्षद मेहता का मामला, दूर-संचार घोटाला, चीनी घोटाला हवाला काण्ड आदि। यह समस्या सरकार तथा जनसाधारण के लिए चुनौती बनी हुई है।

(13) सत्तारूढ़ दल में असन्तुष्ट गुट :-

(14) संसदीय वाद विवाद में गुणात्मक ह्रास

(15) धनशक्ति की बढ़ती भूमिका।

(16) रा० दलों की संरचना तथा स्वरूप

(17) हिंसा की प्रवृति

Scanned by TapScanner

From the desk of

Date

(20) सरकार का बाहर से समर्थन करने की प्रवृत्ति

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय रा० व्यवस्था मे नित्य नई-2 प्रवृत्तियाँ पैदा हो रही है लेकिन ये नकारात्मक अधिक है जो चुनौती के रूप मे राष्ट्र के समक्ष खड़ी है। भारतीय राजनीति सिद्धान्तहीन एवं अवसरवादी हो गई है जिसमें धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र आदि तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका हो गई है। अतः वर्तमान मे आवश्यकता इस बात की है कि हमारे राजनेता, बुद्धिजीवी एवं जनसामान्य मिल कर ऐसा वातावरण बनाए कि सभी संकीर्णताओं को समाप्त कर व्यापक राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने वाली विचारधारा की ओर बढ़े।

=

Scanned by TapScanner